नाचा का वैभवपूर्ण वर्तमान और भविश्य

का''ीराम सिंह

का''ीराम सिंह नाचा से जुड़े कलाकार हैं। आप विलासपुर के पास के एक गांव में रहते हैं। वह कहते हैं कि 'नाचा' छत्तीसगढ़ी लोक नाट्य की आत्मा प्रहसन अथव व्यंग्य है। लोक कथा और बोध कथा का यह अनूठा संयोग है। इसमें नीति और विचार के गौरव का आख्यान है। गम्मत की कला और विचार संपदा का मूल भाव सीधे धरती की जड़ों से रस खींचता हुआ सामने आता है। नव रसों से भींना नाचा का अपना उदात्त चरित्र है। नाचा के कलाकार में सृजन और रचनात्मकता की अद्वितीय क्षमता होती है। यह भाव, अभिनय और भाशा की दृश्टि से काफी समृद्ध होते हैं। वह अपनी क्षमता का नित् और नवीन प्रद''ान करता है। क्योंकि, नाचा की कोई लिखी हुई स्किप्ट नहीं होती है। ये कलाकारा सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियों का चित्रण बहुत मार्मिक ढंग से करते हैं।

आमतौर पर, नाचा के कलाकार सीधा, सरल और सहज ग्रामीण जीवन जीते हैं। ये कलाकार गांवों में ही रहते हैं और गांव की घटनाओं को ही अपनी कला में पिरोते हैं। लोकनाट्य नाचा हमारे जीवन से जरूर जुड़ा हुआ है। पर हम इससे अपनी आजीविका नहीं चला सकते। मैं भी अन्य कलाकारों की तरह अपना घर चलाने के लिए रा''ान की दुकान चलाता हूं। वैसे ही अन्य कलाकार भी हमारे बीच के ही कोई मजदूर, कोई कुम्हार, कोई बेरोजगार, कोई संपन्न किसान है तो कोई पान की दुकान चलाता है। जब जैसा समय होता है। भाारदीय नवरात्र के समय तो मढ़ई यानी मेले लगते हैं। उन दिनों तो हम सभी 'नाचा' के लिए काम करते हैं। बाकी समय में अपने–अपने काम–धंधों में लगे रहते हैं। नाचा में जातियों के आंतरिक गुणों, जातीय व्यवसाय तथा वि''ोशता पर चर्चा होती है। जाति के साथ जुड़े ग्रामीण व्यवसाय को लेकर नाचा में खूब मनोरंजक बातें होती है। नाई, धोबी, कोतवाल, देवार, कूर्मि, सोनार, ब्राम्हण लगभग सभी जातियों पर उन्हें लेकर मजेदार फब्तियां कसी जाती हैं, जिसका आनंद स्वस्थ ढंग से लेते हुए, नाट्य प्रस्तुति की सराहना ही की जाती रही है। छत्तीसगढ़ में सामंती भाोशण के युग की नारी के देह की भाोशण की कथाओं में केवल सिसकियां पाई जाती हैं। प्रतिकार का माद्दा जब इतने विकास के बाद आज भी नहीं है, तो निरक्षरता और आर्थिक बदहाली के उस दौर की कल्पना ही कर सकते हैं।

का''ीराम सिंह कहते हैं कि पहले नाचा को गांव का हर वर्ग सराहता था। यहां तक कि जिसके विरूद्ध नाचा में बात कही जाती थी। वह भी सच को सहजता से स्वीकार करता था और दादा देता था। मगर, धीरे–धीरे फिल्मों का असर होने लगा और इसकी तीखी व्यंग्यात्मक भौली कमजोर पडने लगी। इससे नचकाहरिन और परी की जो जोरदार एंट्री होती थी, वह भी दयनीय होने लगी। पुरानी मुजरा का अंदाज भी अपनी चमक खोने लगा। हां, यह जरूर है कि पांचवें–छठे द''ाक में विशय और प्रस्तुतिकरण की नजर से कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। उस समय की कई सामाजिक समस्याओं को नाचा के कलाकारों ने द''ाकों के सामन लेकर आए। इससे नाचा पार्टियों को समाज में अच्छी इज्जत और प्रतिश्ठा मिली। पर, कालांतर में कलाकारों ने अपनी कला को पॉलि''ा करने के बजाय मंच सज्जा, वे''ा–भूशा, बाकी चमक–दमक के पीछे अपनी ऊर्जा को व्यर्थ बरबाद करने लगे। इस बदलाव से मन कभी–कभी बहुत दुखी होता है। सोचता हूं, हम क्या थे, क्या हो गए और अभी आने वाले समय में क्या होंगें? हम कलाकारों और नाचा पार्टियों के सामने बहुत बड़ी चुनौती है।

नाचा का परिश्कार जरूरी है। इस दि''ा में कुल लोगों ने अच्छ प्रयास भी किए हैं। जैसे–रामहृदय तिवारी, हबीब तनवीर, मंदरा दाऊ, संतोश कुमार साहू, धनराज साहू, कृपाल सिंह ठाकुर, रूपसिंह राठौर, विश्णु निशाद ने बहुत बेहतरीन काम किया है। इस चर्चा को आगे बढ़ाते हुए, का''ीराम कहते हैं कि कहानी प्रस्तुतिकरण और समुचित परिवर्तन ने सबका ध्यान आकर्शित किया है। आम जन के साथ ही प्रबुद्ध समालोचकों ने भी रामहृदय तिवारी के काम की बहुत प्र''ांसा की। आज नाचा के दो रूप प्रचलित हैं। एक गांव की गंवई पंरपरा से चलने वाले साधनहीन नाचा दलों को द''ाक सिर–आंखों पर बिठाता है। वहीं दूसरी नगरीय क्षेत्रों में तामझाम और चकाचौंध वाले दलों की तूती बोलती है। यह सच है कि नाचा मनोरंजक लोकविधा है।

हमारा समय संकमण काल का दौर है। यहां नाचा के मूल रूप को सुरक्षित रखने और उसका सही दि''ा में विकास करने का दायित्व केवल लोक कलाकारों या रचनाकारों या पार्टियों का नहीं बल्कि, पूरे समाज और दे''ा का है। ऐसा नाचा कलाकार का''ीराम सिंह मानते हैं। वह कहते हैं कि छत्तीसगढ़ी लोक कला मंच के कलाकारों ने अपनी रचनात्मकता का परिचय देते हुए, कई फिल्मों की कहानियों को नाचा में रूपांतरित कर पे''ा किया है। वास्तव में, नाचा के लोक कलाकारों ने अपने कर्णप्रिया संगीत, आकर्शक वे''ाभूशा और प्रत्येक चरित्र में डूब कर उसे जीवंत बनाने

की अपनी क्षमता द्वारा उसे प्रभावपूर्ण बनाने का प्रयास किया है। नाचा की परंपरा पूरी तरह वाचिक है। बाकी इसे कलाकार अपने अनुभव से सीखता है।

लोकनाट्य नाचा के बारे नेमिचंद जैनजी का कहना, मुझे हमे''ाा याद आता है। लोक संस्कृति या लोक नाट्य के संदर्भ में जब भी चर्चा होती थी, हमें अतीत के साथ वर्तमान का सामंजस्य देखना पड़ता है। नेमिचंदजी को याद करते हुए, का''ीराम कहते हैं कि उनकी बात मुझे हमे''ाा याद आती है कि वो कहते थे कि लोक कला बीज की तरह पुरानी होकर भी फल की तरह नई होती है। लेकिन, पुर्नसृजन और परिमार्जन के नाम पर भौंडापन स्वीकार नहीं किया जा सकता। श्रेश्ठतम परंपरा में विकृति का समावे''ा उसका विकास नहीं माना जा सकता। यह सही है कि फिल्म और उपभोक्ता संस्कृति के प्रभाव में नाचा लगातार विकृत होता गया है। इसके बाद भी यह खु''ाी की बात है कि कुछ नाचा पार्टियां अभी भी छत्तीसगढ़ की मिट्टी की खु''ाबू को बरकरार रखने की कोि''ा''ा में जुटी हुई हैं। समकालीन लोक भाशाई संवादों में गति''ाील यथार्थ का वह अंतरनिहित ध्वन्यात्मक संसार जीवित है। जहां ठेठ छत्तीसगढ़ी भाशा, ठेठ जातीय परंपरा का विकास करती हुई अपनी मिठास, लय और अभिव्यंजना के साथ एक नया रूप और नया अस्तित्व बोध ग्रहण करती है। और यही नाचा छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक धरोहर है। नमीचंदजी अक्सर कहते थे कि नाचा हमे''ाा नव प्रयोगों का स्वागत करता रहा है। ऐसे प्रयोगों से कला का ह्रास नहीं होता, उसमें विकृति नहीं आती। बल्कि, हमारी बुनियादी परंपराओं का, हमारी धरोहर का विकास होता है।